Subject :- Sociology Date :- 29/04/2020
Class :- B-II (H) Paper :- 4th
Topic :- मनोवृत्ति मापन के थर्स्टन स्केल
By :- Dr. Shyamanand Choudhary Guest Teacher
Marwari college, Darbhanga, 9507941619

Thruston Scale

Online Study Material No :- (54)

Thrustone द्वारा प्रस्तुत पैमाने मे एक ऐसी विधी का प्रयोग किया जाता है किसी विषय के प्रति किसी समूह या समुदाय के मनोवृत्तीयों का मापन संकलीत कथनो के आधार पर किया जा सके। सन 1929 से 1931 के बीच Thrustone जब शिकागो विश्व विद्यालय मे थे। Thurstone एवं उनके सहयोगीयो ने अनेक विषयों, चर्च, युद्ध, मृत्युदण्ड आदि के संबंध मे मनोवृतीयो को मापने के लिये एक पैमाने को प्रस्तुत किया जिसे Thrustone scale के नाम से जाना जाता है इन पैमाने मे हम अनुकूल मतो से प्रतिकूल मतो तक क्रमिक फैलाव पाते है पैमाने के दोनो छोर क्रमशः अत्यधीक अनुकूल एवं अत्यधीक प्रतिकूल मनोवृती को प्रगट करता है।

पहला चरण :-

Thrustone विधि का सिद्धांत यह है कि यदि एक व्यक्ति किसी कथन को स्वीकार या अस्वीकार करता है तो उसके आधार पर मनोवृती के पैमाने मे एक निश्चित स्थान प्राप्त होता है Thrustone Scale के निर्माण मे निम्नलिखित चरणो से गुजरना पड़ता है Thurstone Scale Method मे वस्तु, विषय, या समस्या के संबंध मे कथनो का संकलन समकालीन प्रकाशित पत्र-पत्रिका, अखबार लेख ~~आदि~~ लोक सभा, राज्य सभा, विधान मंडल की करवाइया आदि। प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत्रो से प्राप्त किया जाता है इन कथनो के संग्रह मे इस बात का ध्यान रखा जाता है कि इसमे अनुकूल, प्रतिकूल, तटस्थ सभी प्रकार के मतो का समावेश हो। वैसे मतो कि संख्या कि सिमा निर्धारीत नही है पर Thrustone ने स्वयं चर्च के प्रति मनोवृति के अध्ययन के समय ऐसे 30 कथनो का संकलन किया था, ये संग्रहीत कथन संक्षिप्त, स्पष्ट एवं सामयिक होना चाहिये। तथा इन कथनो का रुप ऐसा होना चाहिये जिससे उत्तरदाता स्वीकृति या अस्वीकृति करने मे या उसके प्रति तटस्था प्रगट करने मे किसी प्रकार का संकोच न हो।

दूसरा चरण :-

दूसरे चरण मे कथनो के एकत्रीकरण के पश्चात इनका संपादन किया जाता है, संपादन करते समय यह ध्यान रखा जाता है कि :-

(i) प्रत्येक कथन के अन्तर्गत एक पूर्ण विचारधारा पायी जानी चाहिये।

(ii) यथा संभव कथन सरल एवं सूक्ष्म वाक्य के रूप मे होना चाहिये। जटिल एवं लम्बी कथनो का बहिष्कार करना चाहिये।

(iii) ऐसे कथनो का प्रयोग नही करना चाहिये जो scale के निर्माण के पश्चात प्रयोगकर्ताओ के लिये सरल एवं सुबोधगम्य न हो।

(iv) ऐसे कथनो का भी बहिष्कार करना चाहिये जो जिनका विवेचन अनेक प्रकार से किया जा सकता है, या फिर जिसका संबंध अनुसंधान कि समस्या से न हो।

ऐसे संग्रहीत मतो को संपादीत करने के पश्चात उन्हें अलग - अलग पर्चो मे लिखा जाता है फिर स्वतंत्र रूप से कम करते हुये 50 से 300 के बीच निर्णायो को चूना जाता है, तथा उनके पास ऐसे पर्चो का एक - एक set भेजा जाता है जजो को यह स्पष्ट आदेश दिया जाता है कि वे कथनो को 11 ग्यारह श्रेणीयो मे विभाजित कर दे। इन ग्यारह श्रेणियो कथनो का विभाजन अत्यधीक अनुकूल से तटस्थ एवं तटस्थ से अत्यधीक प्रतिकूलता की ओर कि जानी चाहीये। यानी A श्रेणी मे वैसे कथन हो जो सर्वाधीक अनुकूल हो B मे उससे कम अनुकूल इसी तरह F मे तटस्थ कथन तथा K श्रेणी मे सर्वाधीक प्रतिकूल कथन होना चाहीये। तात्पर्य यह है कि A से K अनुकूलता से प्रतिकूलता की ओर कथन को एक क्रम मे सजा देना है।

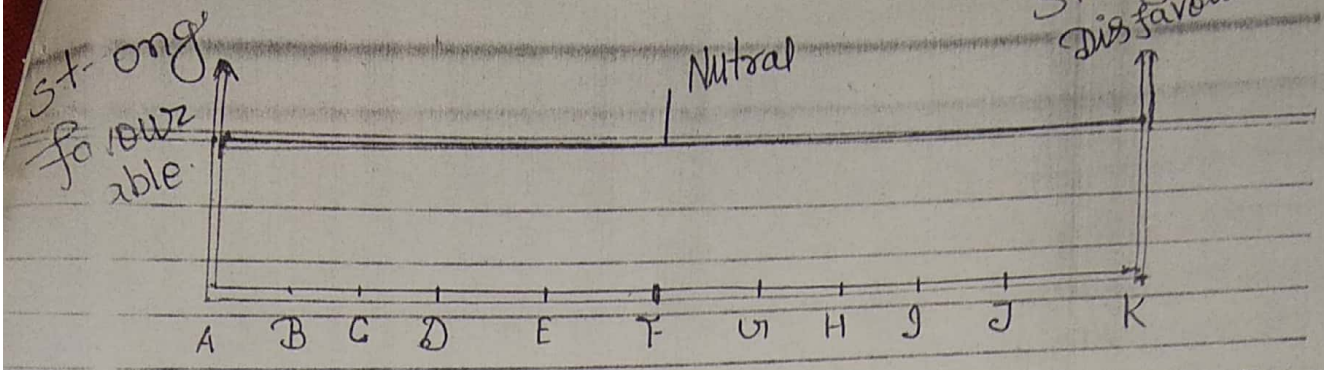

इस क्रम निर्धारण में जजों को यह आदेश दिया जाता है कि वे अपने मनोवृत्ती या मतों का समावेश न करें। वरण कथनों का मूल्यांकन करही 11 ग्यारह श्रेणीयों में बाँट दें।

उपरोक्त निर्देशों के अनुसार जब सभी निर्णायकों का मत ज्ञात हो जाता है, प्रत्येक कथन को दिये गये स्थान पर, के आधार पर सारणी का निर्माण कर लिया जाता है। सारणी का निर्माण करते समय एक विशेष प्रक्रिया को ध्यान में रखा जाता है। सर्वप्रथम निर्णायकों द्वारा छाँटी गई पर्चीयों के ढेर को देखकर यह ज्ञात किया जाता है कि कितने निर्णायकों ने किसी विशेष पर्ची को प्रथम श्रेणी में रखा तथा कितने निर्णायकों ने द्वितीय श्रेणी में। इस प्रकार निर्णायकों के मत को ज्ञात कर उन्हें आवृती के खाने में लिख दिया जाता है, इसके पश्चात आवृतियों को संचयी बारम्बारता परिवर्तित कर दिया जाता है, अंत में संचयी आवृती (cummulative frequency) ज्ञात करने बाद उनका संचयी अनुपात ज्ञात किया जाता है इसका सूत्र इस प्रकार है —

$$\text{संचयी अनुपात} = \frac{\text{संचयी आवृती}}{\text{कुल संख्या}}$$

संचयी अनुपात ज्ञात करने के पश्चात विभिन्न कथनों का संख्यात्मक माप ज्ञात किया जाता है। इसके लिये प्रत्येक वर्ग की माध्यिका को ज्ञात करना आवश्यक है, इसके आधार पर मनोवृति का मूल्य मालूम हो जाता है। संपूर्ण गणना से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि किसी कथन का मूल्य जितना कम होता है, उससे संबंधित मनोवृति विषय के उतना ही पक्ष में मानी जाती है,

अधिक
जबकी कथन का मूल्य अधीक होने पर यह प्रतिकूल मनोवृती को प्रदर्शित करता है।

Dr. Shyamanand Choudhary Guest Teacher
Marwari College, Darbhanga, 9507941619

Scanned with CamScanner